International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(4): 44-45

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(4): 44-45
© 2017
www.anantaajournal.com
Received: 12-05-2017
Accepted: 13-06-2017

डॉ संजू गर्ग
व्याखात – संस्कृत
राजकीय महाविद्यलालय, बहरोड,
राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ संजू गर्ग
व्याखात – संस्कृत
राजकीय महाविद्यलालय, बहरोड,
राजस्थान, भारत

संस्कृत वाड्मय एवं राष्ट्रवाद

डॉ संजू गर्ग

प्रस्तावना

सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु में क्त प्रत्य लगाने पर संस्कृत शब्द निष्पन्न हुआ है। संस्कृत शब्द का अर्थ है –पूर्ण किया गया, परिष्कृत अथवा मांजकर चमकाया हुआ। संस्कृत शब्द क्षेष्ठ एवं सर्वोत्तम अर्थ में भी प्रकृत होता है। व्याकरणदि से परिशुद्ध किया गया शब्द संस्कृत कहलाता है। भर्तहरि ने में कहा – ''वाण्येका समलंकरोति पुरूषं या संस्कृता, धार्यते।''

वाड्.मय शब्द सामान्यतः साहित्य के अर्थ में प्रकृत करता है। वाक् शब्द में मयर प्रत्यय पूर्वक वाड्.मय शब्द निष्पन्न हुआ है। वामन शिवराम आप्टे (2) ने वाड्.मय शब्द का अर्थ वाणी वाग्मिता एवं आसंकारिक इत्यादि अर्थ ग्रहण किए है। डॉ रामसरूप रसिकेश (3) वाड्मय का अर्थ वाक्यात्मक वाडिवहित भाषा एवं साहित्य ग्रहण करते है।

संस्कृत वाड्.मय के अर्न्तगत धर्म, नीति, ज्ञान, दर्शन, कला शिल्प पुरातन विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, ज्योतिष, आध्यात्म तौर मानव जीवन के लगभग सभी विषयों का वर्णन उपलब्ध होता है। संस्कृत साहित्य अनेक अमूल्य ग्रंथ रत्नो का अर्णव है। संस्कृत साहित्य के अर्न्तगत वैदिक साहित्य लोकिक साहित्य, प्राचीन काव्य, गद्य साहित्य कथा साहित्य आधुनिक साहित्य एवं ऐतिहासिक काव्य मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष को अन्तर्निहित करने के साथ साथ राष्ट्रवाद एवं विश्व वन्धुत्व के भाग को भी उजागर करने वाले है। संस्कत साहित्य के सन्दर्भ में महाभारत के इस कथन को यन्नेहास्ति न तत्कवचित! कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति ही होगी। अतः साहित्य में राष्ट्रवाद को जानना आवश्यक है।

राष्ट्रवाद से तात्पर्य है–एक विश्वास, पंथ या राजनीतिक विचारधारा है। जिसके द्वारा व्यकित अपने गृह राष्ट्र के साथ अपनी जिसमें राष्ट्र को सबसे अधिक प्राथमिकता दी जाती है। वह धारणा या विचार जिसमें देश या राष्ट्र ही सर्वोपरि होता है। राष्ट्र के हित एवं कल्याण को ध्यान में रखा जाता है। राष्ट्र की उन्नति, संपन्नता और विकास को प्रधानता दी जाती है। राष्ट्र की परम्पराओं का पालन एवं सम्मान किया जाता है। यह धारणा ही राष्ट्रवाद कहलाती है। राष्ट्र की परिभाषा एक ऐसे जन समूह के रूप में ही जा सकती है जो कि एक भौगोलिक सीमाओं के एक निश्चित देश में रहता हो, समान धारनाओं में बंधा हो और जिसमें एकता के सूत्र में बॉधने की उत्सुकता हो। राष्ट्रवाद के निर्णयिक तत्वों में राष्ट्रीयता की भावना सबसे अधिक महत्तवपूर्ण होती है। राष्ट्रीयता की भावना किसी राष्ट्र के सदस्यों में पायी जान वाली सामुहिकता की भावना है जो कि मानव जाति के संगठन को सुहढता प्रदान करती है।

संस्कृत वाड्मय के अर्न्तत वैदिक साहित्य के राष्ट्र शब्द का उल्लेख मिलता है । समृद्ध है एवं वैभव शाली राष्ट्र की कामना वैदिक सूक्तों के अनेक मंत्रो में वर्णित है। राष्ट्र की समुन्नति की कामना करते हुए शुक्ल यजुर्वेद में उल्लेख किया गया है। '' आ ब्रहमान्ब्राहणों ब्रहावर्चयसी जायताभा राष्ट्रे राजन्यः शूरऽसव्योऽतिव्याधि महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानडवानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः समेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामें नः पर्जन्यों वर्षतु फलवल्यों नऽओषध्यः पच्यन्तां योगक्षेतों नः कल्पताम''

अर्थात इस मन्त्र के माध्यम से राष्ट्र एवं राष्ट्र में निवास करने वाले सभी प्राणियों की सुख समृद्धि की कामना की गई है। ऐसे अनेकोनेक मंत्र वैदिक साहित्य के अर्न्तगत विद्यमान है जो कि राष्ट्रवाद की भावना से ओत प्रोत है। राष्ट्रवाद की सुन्दर भव्य और क्षेष्ठ कल्पना संस्कृत साहित्य के अतिरिक्त अन्यत्र असंभव है।

राष्ट्र वस्तुतः वही क्षेष्ठ एवं उत्तम होता है जहां के निवासी सदैव प्रेम से एवं मिल जुलकर रहे। किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं विकास वहां रहने वाले लोगों की संख्या पर निर्भर नही करता है, अपितु इस बात पर निर्भर करता है कि वहां रहने लोग बहुत भाषा भाषी एवं विविध धर्म के अनुयायी होते पर भी परस्पर प्रेम एवं बन्धुत्व का भाव रखते है या नही । यथा –

ये देवा राष्ट्र भृतोऽमितो यन्ति सूर्यम।
तैष्टे रोहितः संविदानो राष्ट्र दधातु सुमनस्यानः।।

धर्मशास्त्रीय ग्रंथों में राष्ट्रवाद का स्वरूप उपलब्ध होता है।
अग्तिपुराण में राष्ट्र की श्रेष्ठता के संदर्भ में कहा गया है। –
राज्याङग्ना वंर राष्ट्र साधनं पालयत्े सा।
राष्ट्र में शासन के साथ संस्कृत भाषा, जाति, शक्ति संगठन, एवं देश रक्षा इत्यादि सम्मिलित है। सम्मिलित रूप से ये सभी तत्व राष्ट्रीय भावना के प्रतीक माने जा सकते है।
कौटिल्य ने राष्ट्र क लिए देश शब्द का प्रयोग किया है यथा देश दैवत समाजोत्सवविहारेशु च भक्तिमनुवर्तेत।
किसी भी राष्ट्र का वैभव एवं उत्कर्ष, राजा की सुचारू शासन प्रणाली, उत्तम भूमि, एवं निवासियों पर आधारित होता है। संस्कृत साहित्य में राष्ट्र की समुन्नति हेतु निर्देश देते हुए कहा गया है। –

य एव यन्त्नः क्रियते परराष्ट्र बिमर्दन।
स एवं यत्नः कर्तव्यः स्वराष्ट्र परिपालने।।

अर्थात संस्कृत साहित्य में दूसरों को हानि पहुंचाने की अपेक्षा अपने राष्ट्र की रक्षा और उन्नति हेतु प्रत्यन करने का संकेत दिया गया है। समस्त संस्कृत साहित्य में विविधता में एकता एवं विश्व बन्धुत्व के भाव को प्रति बिम्बिल किया गया है। संस्कृत साहित्य में राष्ट्र में प्रेम सौहार्द, सामञजस्य, एकता एवं संगठन के माध्यम से राष्ट्रोन्नति का संदेश दिया गया है।
संस्कृत साहित्य के अर्न्तगत सभी के सुख एवं मंगल की बहुत ही सुन्दर कामना की गई है जो कि राष्ट्रवाद का अनुपम दृष्टानत है यथा –

समानी प्रपा सह वोडन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनिज्न ।
सम्यञचोडिग्ंन सपर्यतारा ना भिमिवामितः ।

अर्थात इस मंत्र से माध्यक से सभी की समानता एकता और प्रेम का भाव व्यक्त किया गया है यह आदर्श राष्ट की नीवं है उक्त महान और क्षेष्ट भावनाओं सवोपरिं है।
न केव अपने शुभचिन्तक जन के हित की ही कामना गई है अपितु संस्कृत साहित्य तकके विरोधियों के भी मंगल की कामना की गई। यथा माईस्मान्अ द्धेष्टि यं वयं द्विस्मस्तस्य त्वं प्राणेनात्यायस्व।

आ वयं प्यासिषीमहि गोमिरश्वैः प्रज्या पंशुमिर्गहै र्धनेन।।

अर्थात स्तोता परमात्मा से अपने एवं शत्रुता रखने वाले विरोधी के भी कल्याण की कामना करता है । ऐसा अनुपम प्रेम, त्याग एवं मानवाता भारतवर्ष की ही पहचान हो सकती है। संस्कृत साहित्य में ऐसे बहुत से दृष्टान्त एवं नैतिक उपदेश उपलब्ध होते है जो कि राष्ट्रवाद देश प्रेम एवं विश्ववबन्धुत की भावना पर बल देते हैं। ''वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना हमारी संस्कृति की ही देन हैं
वर्तमान में भारत देश भ्रष्टाचार, स्वार्थ लोलुपति, चाटुकरिता इत्यादि दोषों से घिरा हुआ है। एक ओर देश में अपराधीकरण साम्प्रदायिकता और जाति वाद हावी हो रहा है दूसरी और नेता राष्ट्रहित को विस्मृत कर वोटों की राजनीति में उलझे हुए है। ऐसी स्थिति में संस्कृत साहित्य में वर्णित राष्ट्रवाद का उज्जवल स्वरूप मानव का प्रेरक हो सकता है। मझधार में फॅसी राष्ट्र रूपी नैय्या का पार कराने में सहायक सिद्ध हो सकता है। ाारत राष्ट्र क अखडंता भारतवायिों की पारस्परिक एकता एवं प्रेम पर ही निर्भर है। आज भारत की अखंडता एवं एकता के लिए संस्कृत साहित्य अति उपयोगी होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

संदर्भ सूची

1. भर्तृहरि – 2/19
2. संस्कृत हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, मोती लाल बनारसीदास दिल्ली–1966, प्र0संख्या 222
3. आर्दश हिन्दी संस्कृत कोश है । रामस्वरूप रसिकेश चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी 2004
4. शुक्ल यजुर्वद 22/22
5. अर्थवेद – 13/1/35
6. अग्निपुराण 239/2
7. कोटिलीयम अर्थ शास्त्रम 13/05/08
8. विदुरनीति 2/30
9. अर्थर्ववेद 03/30/06
10. अर्थवेवेद 07/81/5